श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2012

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 25 अगस्त 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 26 अगस्त 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 27 अगस्त 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।
शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **ह्न ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2538) 349 अंक : 1

जीवनि के परिणामनि...

जीवनि के परिणामनि की यह, अतिविचित्रता देखहु ज्ञानी।।टेक।।
नित्य निगोदमांहितैं कढिकर, नरपरजाय पाय सुखदानी।
समकित लहि अन्तर्मुहूर्त में, केवल पाय वरै शिवरानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।1।।
मुनि एकादश गुणथानक चढि, गिरत तहाँतैं चित भ्रम ठानी।
भ्रमत अर्धपुद्गल परावर्तन, किञ्चित् ऊन काल परमानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।2।।
निज परिणामनि की संभाल में, तातैं गाफिल मत ह्वै प्रानी।
बंध मोक्ष परणामनि ही सों, कहत सदा श्री जिनवरवानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।3।।
सकल उपाधि निमित्त भावनि सों, भिन्न सु निज परिनति को छानी।
ताहि जानि रुचि ठानि होहु थिर,'भागचंद'यह सीख सयानी।।
जीवनि के परिणामनि...।।4।।

- कविवर पण्डित भागचन्दजी

छहढाला प्रवचन

अजीव द्रव्य

चेतनता बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं।
पुद्गल पंच वरन-रस, गंध-दो फरस वसू जाके हैं।।
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनरूपी।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिन-मूर्ति निरूपी।।७।।
सकल द्रव्य को वास जास में, सो आकाश पिछानो।
नियत वर्तना निश-दिन सो, व्यवहारकाल परिमानो।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

चेतनवंत तत्त्व तो जीव है और चेतनता से रहित तत्त्व अजीव है। अजीव के भेद पाँच हैं - पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

पुद्गल – यह रूपीद्रव्य है, अतएव वर्ण-गंध-रस-स्पर्श वाला है। छह द्रव्यों में एक पुद्गल ही रूपी है, मूर्त है। हरा, पीला, लाल, सफेद व काला - ये पांच रंग, सुगंध और दुर्गन्ध - ये दो गंध, खट्टा, मीठा, चरपरा, कड़ुवा व कषायला - ये पाँच रस तथा हल्का-भारी, रूखा-चिकना, मुलायम-कर्कश, शीत-उष्ण - ये आठ स्पर्श, यह सब पुद्गल की रचना है, पुद्गल की पर्याय है। शब्द भी अजीव पुद्गलों की अवस्था हैं, वह जीवों का कार्य नहीं है। ये सब अजीव पुद्गल के प्रकार होने से अचेतन हैं, जीव से वे भिन्न हैं - ऐसा जानना।

धर्मद्रव्य तथा अधर्मद्रव्य – ऐसे दो अजीवद्रव्य सर्वज्ञदेव ने देखे हैं, वे अति सूक्ष्म हैं और सारे लोक में व्यापक हैं; एक जीव के जितने (असंख्य) प्रदेश हैं, उतने-उतने प्रदेश धर्म और अधर्म द्रव्य के हैं। जीव और पुद्गल जब गति करते हैं, तब उनका सहायक-निमित्त धर्मद्रव्य है और वे गतिमान जीव-पुद्गल जब स्थिर होते हैं, तब उनका सहायक-निमित्त अधर्मद्रव्य हैं, ये दोनों द्रव्य अरूपी और अचेतन हैं।

आकाशद्रव्य – ऊपर जो बादल दिखता है, वह तो पुद्गल की रचना है, वह

आकाशद्रव्य नहीं है। आकाशद्रव्य तो अरूपी है; सर्वव्यापी है, ऊपर-नीचे चारों तरफ सर्वत्र आकाश है। आकाश अर्थात् क्षेत्र-जगह। जीव-अजीव सभी द्रव्यों का आकाश में वास है। आकाश इतना बड़ा (अनंत) है कि उसके एक छोटे से (अनंतवें) भाग में शेष सब जीव-अजीव तत्त्व रहते हैं। अनंत आकाश का पार नहीं है; फिर भी ज्ञान तो उसको भी पूर्णतया जान लेता है। ज्ञान का तो कोई अचिंत्य महान सामर्थ्य है। धर्मी जीव ऐसे आकाशद्रव्य को और उसको जानने वाले ज्ञान की श्रद्धा करते हैं।

कालद्रव्य – यह भी अजीव है। उसमें समय-समय वर्तनारूप अरूपी कालाणु निश्चयकाल है, वे असंख्यात हैं और घटिका-मुहूर्त-दिन-मास-वर्ष-सागरोपम आदि प्रमाण व्यवहारकाल है। पदार्थ के परिणमन स्वभाव में यह निमित्त है। यह कालद्रव्य भी अरूपी एवं अजीव है।

ऐसे अजीवतत्त्व के पाँच प्रकार कहे, धर्मी जीव ऐसे तत्त्व की श्रद्धा करते हैं।

एक जीव और पाँच अजीव - ऐसे छह जाति के द्रव्य हैं। उनमें एक चेतन और पाँच अचेतन; एक मूर्त-रूपी और पाँच अमूर्त-अरूपी; एक सर्वव्यापी और पाँच असर्वव्यापी; चेतना वाला जीव और चेतनारहित अजीव - ऐसी संक्षिप्त व्याख्या करके जीव-अजीव की भिन्नता समझायी है।

प्रश्न – अजीव तत्त्व चेतना से रहित है, अत: उसमें ज्ञान नहीं है - यह ठीक है, किन्तु वह जानने में जीव का सहायक तो है न ?

उत्तर – ना; जीव का ज्ञानस्वभाव दूसरों की (इन्द्रियादि की) सहायता से रहित है। इन्द्रियादि का निमित्त तो पराधीन ऐसे इन्द्रियज्ञान में है और उसमें भी ज्ञान तो स्वयं जीव से - अपने से होता है, इन्द्रियों से नहीं होता। केवलज्ञान वगैरह में तो इन्द्रियादि का निमित्त भी नहीं है। ज्ञान का आधार आत्मा है, ज्ञान का आधार जड़ इन्द्रियाँ नहीं हैं।

केवलज्ञान में ज्ञेयरूप से सारा विश्व निमित्त है; परन्तु उसमें से ज्ञान नहीं आता। आत्मा का ज्ञान कोई अचेतन वस्तु में नहीं है एवं कोई अचेतन वस्तु ज्ञान में नहीं है; इसप्रकार ज्ञान को पर से अत्यन्त भिन्न जानना। सात तत्त्वों का ज्ञान करने से जड़-चेतन की ऐसी भिन्नता का ज्ञान भी हो जाता है।

अहा, मेरा ज्ञान मेरे में ही है; अजीव में मेरा ज्ञान नहीं। मेरा ज्ञान अजीव के

पास में से नहीं आता। ऐसा समझकर ज्ञान को अपने आत्मा के सन्मुख करने से अपूर्व आनन्द का अनुभव होता है।

यहाँ धर्म-अधर्म आदि सूक्ष्म द्रव्यों की पहचान गति-स्थिति आदि में उनका निमित्तपना दिखाकर कराई। धर्मास्तिकाय स्वयं स्थिर द्रव्य है, वह तो किसी पदार्थ को गति नहीं कराता, परन्तु स्वयं गतिमान द्रव्यों को वह गति में निमित्त है। वैसे जगत् के कार्यों में जो कोई निमित्त कहा जाये, वे सब निमित्त भी धर्मास्तिकायवत् अकर्ता ही हैं। एक पदार्थ अपने ही स्वभाव से स्वकार्यरूप परिणमन करे और उस समय अन्य पदार्थ निमित्तरूप हो, उससे कहीं किसी की पराधीनता नहीं हो जाती। जैसे केवलज्ञान के सामने ज्ञेयरूप से जगत् निमित्त है, तो क्या इससे केवलज्ञान ज्ञेयों के आधीन हो गया ? ना, वह तो स्वाधीन है; वैसे सभी पदार्थों का परिणमन स्वाधीन है।

चल करके थकित हुए मनुष्य को वृक्ष ऐसा नहीं कहता कि तू यहाँ ठहर! पानी मछली को ऐसा नहीं कहता कि तू चल ! पदार्थ ज्ञान को ऐसा नहीं कहता कि तू मुझे जान! पदार्थ स्वाधीनता से ही अपनी-अपनी गति-स्थिति या ज्ञानादि परिणतिरूप हो रहे हैं। अज्ञान में से ज्ञानरूप परिणमन करने वाले शिष्य के लिए ज्ञानी गुरु निमित्त हैं, परन्तु वे गुरु उसकी ज्ञानपरिणति के कर्ता नहीं हैं। अहा! सर्वज्ञ मार्ग का वीतराग-विज्ञान अलौकिक है। पदार्थ का स्वाधीन स्वरूप यह दिखाता है। ऐसे स्वाधीन तत्त्व का उपदेश, वही इष्ट उपदेश है। ऐसे ही उपदेश से भेदज्ञान व वीतरागता होकर जीव का हित होता है।

किसी वस्तु का स्वयं का स्वरूप क्या है, उसको लक्ष में लेकर समझना प्रारम्भ करना चाहिए; क्योंकि स्व के ज्ञानपूर्वक पर का सच्चा ज्ञान होता है। जैसे कि जगत् में धर्मास्ति-अधर्मास्ति दोनों एक साथ सर्वत्र विद्यमान हैं, उनमें से किसको निमित्त कहना, उसका निर्णय तो पदार्थ के कार्य के अनुसार ही होगा। पदार्थ गमनक्रिया करे, तब धर्मास्ति को निमित्त कहा, अधर्मास्ति को नहीं कहा। इसप्रकार जिस पदार्थ में कार्य हो रहा है, उस पदार्थ के धर्म को देखना चाहिए, संयोग की ओर से नहीं देखना चाहिए। वस्तुस्वभाव के ज्ञानसहित संयोग का ज्ञान करना, सो सत्य है। भगवान ने सभी द्रव्यों के धर्म स्वाधीन अपने-अपने से ही देखे हैं; उसीप्रकार उनका स्वरूप पहचानकर सच्ची तत्त्वश्रद्धा करना चाहिए।

तत्त्वश्रद्धा के लिए जीव-अजीव की अत्यंत भिन्नता का ज्ञान करना जरूरी है। जानने की शक्ति जीव में ही है। यह शरीर, लकड़ी, जीभ, मोटरगाड़ी, घड़ी, रुपये, शास्त्र आदि पदार्थ दिखते हैं; वे सब अजीव हैं। उनमें जानने की शक्ति नहीं है, वे चलते-फिरते-बोलते हुए भी अजीव हैं। चले-फिरे-बोले, सो जीव - ऐसी जीव की व्याख्या नहीं है। चेतना जिसमें हो, वह जीव और चेतना जिसमें न हो, वह अजीव - यह जीव-अजीव की सच्ची पहचान है।

घड़ी चलती है तो क्या वह जीव है ? नहीं, वह अजीव है। रेडियो बोलता है तो क्या वह जीव है ? नहीं, वह अजीव है। उसे कुछ मालूम नहीं है कि मैं घड़ी हूँ या मैं रेडियो हूँ। उसको जानने वाला तो जीव है। करीब सौ वर्ष पहले जब आगगाड़ी (ट्रेन) दौड़ना आरम्भ हुई, तब उसे दौड़ती हुई देखकर कितने ही ग्रामीण लोग उसे जीव अथवा राक्षस मानते थे, कोई उसे नारियल चढ़ाकर पूजते थे। देखो, कैसी भ्रमणा ? धर्म के नाम पर अज्ञानी लोग भी ऐसी ही भ्रमणा करते हैं कि शरीर का चलना-फिरना-बोलना - ये सब कार्य जीव के हैं। जीव ही शरीर को चलाता है; परन्तु यदि जीव-अजीव के भिन्न-भिन्न लक्षण को अच्छी तरह पहचाने तो ये सब भ्रमणायें दूर हो जायें और सच्चा तत्त्वज्ञान प्रगट हो।

अंतरात्मा-सम्यग्दृष्टि सर्वज्ञदेव के कहे हुए अतीन्द्रिय तत्त्वों की श्रद्धा करता है, उनसे विपरीत श्रद्धा उसके नहीं होती। जगत में एक अद्वैत ब्रह्म ही है और उससे भिन्न अजीवादि अन्य कुछ भी सत् नहीं है अथवा कोई ईश्वर इस जगत का कर्ता-हर्ता है - इसप्रकार की विपरीत मान्यता सम्यग्दृष्टि के व्यवहार में भी नहीं होती; व्यवहार में भी सर्वज्ञमार्ग के तत्त्वों की ही श्रद्धा होती है। उसका यह वर्णन चल रहा है, उसमें जीव के तीन प्रकार और अजीव के पाँच प्रकार का वर्णन किया। जीव और अजीव के बाद तीसरा आस्रवतत्त्व है तथा चौथा बन्धतत्त्व है, उसका कथन अब आगे के छन्द में करेंगे। ●●●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन –

आत्मा कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 43वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णिद्दंडो णिद्दंद्दो णिम्ममओ णिक्कलो णिरालंबो।
णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा।।४३।।
निर्दण्ड है निर्द्वन्द है यह निरालम्बी आतमा।
निर्देह है निर्मूढ है निर्भयी निर्मम आतमा।।४३।।

यह आत्मा निर्दंड, निर्द्वन्द, निर्मम, नि:शरीर, निरालम्ब, निराग, निर्दोष, निर्मूढ और निर्भय है।

(गतांक से आगे ...)

इसीप्रकार (श्री योगीन्द्रदेवकृत) अमृताशीति में (५७वें श्लोक द्वारा) कहा है कि –

(मालिनी)

स्वरनिकरविसर्गव्यंजनाद्यक्षरैर्यद्
रहितमहितहीनं शाश्वतं मुक्तसंख्यम्।
अरसतिमिररूपस्पर्शगंधाम्बुवायु–
क्षितिपवनसखाणुस्थूल दिक्चक्रवालम्।।२०।।

(हरिगीत)

जो आतमा स्वरव्यंजनाक्षर-अंक के समुदाय से।
स्पर्श रस गंध रूप से अर अहित से अंधकार से।।
भूमि जल से अनल से अर अनिल की अणु राशि से।
दिगचक्र से भी रहित वह नित रहे शाश्वत भाव से।।२०।।

श्लोकार्थ :– आत्मतत्त्व स्वरसमूह, विसर्ग और व्यंजनादि अक्षरों रहित एवं संख्या रहित है (अर्थात् अक्षर और अंक का आत्मतत्त्व में प्रवेश नहीं है), अहित

रहित है, शाश्वत है, अंधकार तथा स्पर्श, रस, गंध वर्ण से भी रहित हैं, पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के अणुओं रहित है तथा स्थूल दिक्चक्र (दिशाओं के समूह) रहित है।

अक्षर और अंक पुद्गल की पर्याय हैं; आत्मा उनका कर्त्ता नहीं है।

कैसा है आत्मतत्त्व? त्रिकाली शुद्धस्वभावरूप जिसमें से अनन्त निर्मल पर्यायें प्रकट होती हैं। अ, आ आदि स्वर, विसर्ग और क, ख आदि व्यंजन आत्मा में नहीं हैं, यह सब भाषा की अवस्था है, आत्मा बोल नहीं सकता। 'आत्मा' शब्द बोला गया उसमें 'आ' अनन्त पुद्गलपरमाणु (भाषा) के स्कन्धरूप अवस्था है। आत्मा में ज्ञान भरा हुआ है, वह पुद्गल नहीं – जो बोल सके। ज्ञान और भाषा में तो अत्यन्त अभाव है। फिर एक, दो, तीन, हजार, लाख आदि जो संख्या बोली जाती है, वह भी भाषा का ही परिणमन है – आत्मा तो संख्या रहित है। स्वरसमूह और व्यंजन को अक्षर कहा तथा संख्या को अंक कहा है, इन सब का आत्मा में प्रवेश नहीं है।

प्रश्न – आत्मा है, तभी तो बोलता है न?

समाधान – भाई! शब्द तो भाषा की पर्याय है, वह स्वतंत्र है, उसमें आत्मा का भाव निमित्त है – उसका ज्ञान कराते हैं। यदि आत्मा बोलता हो तो जब-जब इच्छा हो, तब-तब बोलना चाहिये; किन्तु ऐसा बनता नहीं। भाषा का परिणमन हो तब आत्मा का जो भाव है, उसका निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध बताया है। पुद्गलपरमाणु द्रव्य अपेक्षा से समान हैं; परन्तु भाषा की पर्यायें भिन्न-भिन्न अपनी वर्तमान योग्यता के कारण होती हैं।

जो जीव द्रव्य को सर्वथा विषम ही माने वह द्रव्य को समझता नहीं।

जो जीव पर्याय को एक समान ही माने वह पर्याय को समझता नहीं।

पुद्गलपरमाणु द्रव्य अपेक्षा से समान हैं और भाषारूप पर्याय में भिन्न-भिन्न परिणमन होता है, आत्मा उसका कर्त्ता-हर्त्ता नहीं; अतः आत्मा अक्षर और अंक से रहित है।

आत्मा अहितरहित शाश्वत प्रकाशमान पदार्थ है; वह पुद्गलपरमाणु

तथा उसके गुणों से रहित है।

आत्मा त्रिकाल शाश्वत पदार्थ है, उसमें त्रिकाल हितपना है। हित-अहितपना के भेद तो पर्याय में पड़ते हैं, शुद्ध स्वभाव में ऐसे भेद नहीं हैं। जिसमें अहित नहीं, ऐसे स्वभाव के आश्रय से हित होता है और अहित सर्वथा टल जाता है। आत्मा अंधकार रहित है, प्रकाश का पिण्ड है। आत्मा स्पर्श, रस, गंध, रूप रहित है। आत्मा पृथ्वी नहीं, पानी के परमाणु नहीं, तथा अग्नि और वायु के अणुओं से रहित है, वायु श्वासादि आत्मा में नहीं हैं। पंचमहाभूत में से भी आत्मा नहीं बना। वह पूर्व, पश्चिम आदि दिशासमूह से रहित है। ऐसे आत्मा की श्रद्धा करना वह सम्यग्दर्शन है।

अब ४३वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज सात श्लोक कहते हैं :-

(मालिनी)

दुरघवनकुठारः प्राप्तदुःकर्मपारः
परपरिणतिदूरः प्रास्तरागाब्धिपूरः।
हतविविधविकारः सत्यशर्माब्धिनीरः
सपदि समयसारः पातु मामस्तमारः ।।६२।।

(रोला)

परपरिणति से दूर और दुष्कर्म पार है।
अस्तमार दुर्वार पापवन का कुठार है।।
रक्षक हो मम रागोदधि का पूर पार जो।
सुखसागरजल निर्विकार है समयसार जो ।।६२।।

श्लोकार्थ :- जो (समयसार) दुष्ट पापों के वन को छेदने को कुठार है, जो दुष्ट कर्मों के पार को प्राप्त हुआ है (अर्थात् जिसने कर्मों का अन्त किया है), जो परपरिणति से दूर है, जिसने रागरूपी समुद्र के पूर को नष्ट किया है, जिसने विविध विकारों का हनन कर दिया है, जो सच्चे सुखसागर का नीर है और जिसने काम को अस्त किया है, वह समयसार मेरी शीघ्र रक्षा करो। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : शुद्धात्मा की रुचिरूप सम्यग्दर्शन को निश्चयसम्यग्दर्शन कहा गया है। उस निश्चयसम्यग्दर्शन के सराग सम्यक्त्व और वीतराग सम्यक्त्व ऐसे दो भेद क्यों?

उत्तर : निश्चय सम्यग्दर्शन के साथ वर्तते हुए राग को बताने के लिए निश्चय सम्यक्त्व को सराग सम्यक्त्व कहा जाता है। वहाँ सम्यग्दर्शन तो निश्चय ही है, परन्तु साथ में प्रवर्तमान शुभ राग का व्यवहार है; अतः उसका सम्बन्ध बताने के लिए सराग सम्यक्त्व कहने में आता है। गृहस्थाश्रम में स्थित तीर्थंकर, भरत, सगर आदि चक्री तथा राम, पाण्डव आदि को सम्यग्दर्शन तो निश्चय था, तथापि उसके साथ वर्तते हुए शुभ राग का सम्बन्ध बताने के लिए उन्हें सराग सम्यग्दृष्टि कहा जाता है। यहाँ मूल प्रयोजन वीतरागता पर वजन देना है। इसलिए निश्चय सम्यक्त्व होने पर भी उसे सराग सम्यक्त्व कहा गया है और उसे वीतराग सम्यक्त्व का परम्परा साधक कहा है। शुद्धात्मा की रुचिरूप निश्चय सम्यग्दर्शन में सराग और वीतराग के भेद नहीं हैं। है तो एक-सा सम्यग्दर्शन, किन्तु जहाँ स्थिरता की मुख्यता का कथन चलता हो, वहाँ सम्यक्त्व के साथ वर्तते हुए राग के सम्बन्ध को देखकर उसे सराग सम्यक्त्व कहा है और राग रहित संयमी के वीतराग सम्यक्त्व कहा है; क्योंकि जैसा वीतराग स्वभाव है वैसा ही वीतरागी परिणमन भी हुआ है; अतः वीतरागता का सम्बन्ध देखकर उसे वीतराग सम्यग्दर्शन कहा गया है।

प्रश्न : ज्ञान प्राप्ति का फल तो राग का अभाव होना है न ?

उत्तर : राग का अभाव अर्थात् राग से भिन्न आत्मा के अनुभवपूर्वक भेदज्ञान का होना, इसमें राग के कर्तापने का - स्वामीपने का अभाव हुआ, राग में से आत्मबुद्धि छूट गई, यही राग के प्रथम नम्बर का अभाव हो गया।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन सहित नरकवास भी भला कहा है तो क्या नरक में सम्यग्दृष्टि को आनन्द की गटागटी है ?

उत्तर : यह तो सम्यग्दर्शन की अपेक्षा से कहा है, फिर भी जितनी कषाय है

उतना दु:ख तो है ही। तीन कषाय है, उतना दु:ख है। मुनि को घानी में पेले, अग्नि में जलावे, तथापि तीन कषाय का अभाव होने से उन्हें आनन्द है।

प्रश्न : सम्यक् श्रद्धा और अनुभव में क्या अन्तर है ?

उत्तर : सम्यक् श्रद्धान-प्रतीति तो श्रद्धागुण की पर्याय है और अनुभव मुख्यत: चारित्रगुण की पर्याय है।

प्रश्न : मिथ्यात्व-आस्रवभाव को तोड़ने का वज्रदण्ड क्या है ?

उत्तर : त्रिकाली ध्रुव ज्ञायकस्वभाव ही वज्रदण्ड है, क्योंकि उसी का आश्रय लेने से मिथ्यात्व-आस्रवभाव टूटता है। प्रथम में प्रथम कर्तव्य राग से भिन्न होकर ज्ञायकभाव की दृष्टि करना है। इस कार्य के किये बिना तप-व्रतादि सभी कुछ थोथा है।

प्रश्न : किसी जीव का उपशमसम्यक्त्व छूट जाय और वह मिथ्यात्व में आ जाय, तो उसे ख्याल में आता है कि मुझे सम्यक्त्व हुआ था ?

उत्तर : हाँ, सम्यक्त्व छूट जाने के बाद थोड़े समय तक ख्याल में रहता है, किन्तु लम्बे समय के पश्चात् भूल जाता है।

प्रश्न : दर्शनपाहुड की गाथा 21 में कहा है कि हे जीव ! तू सम्यग्दर्शन को अन्तरंगभाव से ग्रहण कर। यहाँ बताये हुए अन्तरंगभाव का तथा बहिरंगभाव का भी अर्थ स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर : अन्तरस्वभाव के आश्रय से परिणति प्रगट करना, वह अन्तरंगभाव है, ऐसी परिणति अंशरूप में प्रगट करना, वह सम्यग्दर्शन है। इसके विपरीत नवतत्व की श्रद्धा आदि राग भाव अन्तरंगभाव नहीं है, वे तो बहिरंगभाव हैं। बाह्यलक्ष्य से जो भी भाव हों, वे सब बहिरंगभाव हैं। पुण्य-पाप के परिणाम चैतन्य-अंग नहीं हैं, किन्तु कार्मण-अंग हैं। व्यवहार सम्यग्दर्शन भी कार्मण-अंग है। चैतन्य को चूककर कर्म के सम्बन्ध से जो भी भाव उत्पन्न हों, वे सब बहिरंगभाव हैं, अन्तरंगभाव नहीं। उनसे सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति भी नहीं होती। जड़ की क्रियाओं और बहिरंगभावों में एकत्वबुद्धि छोड़कर अर्थात् परभावों में आत्मबुद्धि छोड़कर अकेले आत्मस्वभाव का आश्रय करना, वह अन्तरंगभाव है, उसी से आत्म कल्याण होता है।

समाचार दर्शन -

सिंगापुर, अमेरिका, कनाडा और इंग्लैण्ड में डॉ. भारिल्ल -

विदेशों में बही धर्म की गंगा

श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** देशभर में तत्त्वप्रचार करने के साथ-साथ विदेश में भी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रचार का कार्य विगत 30 वर्षों से कर रहे हैं। इसी क्रम में इस वर्ष भी उन्होंने सिंगापुर, अमेरिका, कनाडा और इंग्लैण्ड के अनेक नगरों में दिनांक 8 जून से 20 जुलाई तक 41 दिनों तक अनवरत धर्मप्रचारार्थ प्रवास किया। इसी क्रम में उनके सिंगापुर में क्रमबद्धपर्याय पर, लॉस एजिल्स में धर्म के दशलक्षण पर, सान फ्रांसिसको में छहढाला पर, टोरंटो (कनाडा) में प्रवचनसार पर, शिकागो में आत्मानुभूति पर, डलास में पंचकल्याणक पर, लंदन में समयसार बंधाधिकार के गंभीर विषयों पर तात्विक प्रवचन हुये।

डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** भी टोरंटो (कनाडा) गये, जहाँ उन्होंने मोक्षमार्गप्रकाशक के व्यवहाराभासी प्रकरण पर प्रवचन किये।

इस वर्ष **पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** भी दिनांक 22 जून से 19 जुलाई तक विदेश में तत्त्वप्रचार हेतु गये। इस क्रम में उनके अमेरिका के **शिकागो** में 6 दिन प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् पूजन का स्वरूप एवं प्रयोजन पर तथा दोपहर व सायंकाल आत्मानुभूति एवं सम्यग्दर्शन विषय पर प्रवचन हुये। **पिट्सबर्ग** में 6 दिनों तक 15 घण्टे प्रवचनों में अष्ट कर्मों के आस्रव के कारण, विविध पूजनों का अर्थ एवं प्रयोजन पर तथा **डलास** में प्रतिदिन प्रवचनसार पर प्रवचन हुये। आप **टोरंटो (कनाडा)** भी गये, जहाँ आपके निश्चय-व्यवहार एवं तीन लोक विषय पर व्याख्यान हुये।

डलास (अमेरिका) में वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न

यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में नवनिर्मित वेदी पर भगवान आदिनाथ, भगवान शांतिनाथ एवं भगवान महावीरस्वामी की वीतराग भाववाही श्वेत पाषाण प्रतिमायें विराजमान करने हेतु दिनांक 13 से 15 जुलाई 2012 तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। जिनमंदिर में पंचपरमागम एवं षट्खण्डागम ग्रन्थ भी विराजमान किये गये। साथ ही प्रतिमाओं पर छत्र एवं वेदी शिखर पर ध्वज एवं कलश स्थापित किये गये। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के प्रासंगिक प्रवचनों एवं पं. संजीवजी गोधा जयपुर के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिष्ठा विधि के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने सम्पन्न कराये। समस्त कार्य श्री अतुलभाई खारा के निर्देशन में श्रीमती चारुबेन, श्रीमती पुष्पा वैद एवं अनेक युवा कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से सम्पन्न हुये। रात्रि में अखिलभाई एवं युवा साथियों द्वारा ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। सम्पूर्ण आयोजन में लगभग 500-600 साधर्मियों ने भरपूर धर्मलाभ लिया। **- अनंत जैन, डलास**

साप्ताहिक संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में साप्ताहिक गोष्ठियों की अक्षुण्ण परम्परा का उद्घाटन दिनांक 8 जुलाई को प्रात:काल किया गया।

समारोह की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नवीनजी बज (पूर्व अध्यक्ष-समाजशास्त्र राजस्थान विश्वविद्यालय) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवाले जयपुर, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर उपस्थित थे। विद्वानों के अन्तर्गत ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं पण्डित संतोषजी शास्त्री उपस्थित थे। मंचासीन सभी महानुभावों का स्वागत शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने विचार गोष्ठी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि छात्रों को भाषणकला में पारंगत करने हेतु इन गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है, इनमें महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र किसी एक विषय के एक बिन्दु पर मात्र 5 मिनिट में विचार प्रस्तुत करते हैं, जिसमें विषय का सांगोपांग वर्णन करना एक विशिष्ट कौशल की बात है।

ब्र. यशपालजी ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि सभी विद्यार्थी विषय का गंभीरता से अध्ययन कर एवं बिना देखे अपने विषय को प्रस्तुत करें। श्री नवीनजी बज ने विद्यार्थियों को जैनधर्म को गहराई से पढने के लिए विशेष प्रेरित किया। अध्यक्षीय भाषण के अन्तर्गत टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय ने विद्यार्थियों को विषय का सांगोपांग अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया।

मंगलाचरण मयंक जैन अमरमऊ ने एवं संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

सायंकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में 'पंचपरमेष्ठी : एक अनुशीलन' विषय पर इस सत्र की प्रथम गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से अभिषेक जैन हीरापुर एवं शास्त्री वर्ग से जीवेश जैन पिड़ावा का चयन किया गया।

गोष्ठी का मंगलाचरण अंकित जैन भिण्ड (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन ज्ञायक समैया एवं सर्वज्ञ भारिल्ल (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें -

उत्तर पुस्तिकाएँ तत्काल भेजें

द्विवर्षीय विशारद कोर्स उपाध्याय परीक्षा एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत कोर्स शास्त्री परीक्षा के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएँ जून 2012 में संपन्न हो चुकी हैं। जिन परीक्षार्थियों ने अभी तक अपनी उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजी हों, कृपया वे तत्काल भिजवा देवें, ताकि रिजल्ट एवं प्रमाण-पत्र जैसे कार्य समय पर पूर्ण हो सकें। **- ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)**

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

1. नागपुर (महा.) : यहाँ इतवारी नेहरु पुतला स्थित जिनमंदिर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक नंदीश्वर पंचमेरु विधान किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित रवीन्द्रजी महाजन के प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर एवं पण्डित आदेशजी बोरालकर द्वारा संपन्न हुये।

2. पुणे (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक अरहंत दि. जैन ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रात: जिनेन्द्र पूजन का आयोजन किया गया, तत्पश्चात् पण्डित जितेन्द्रजी राठी द्वारा नन्दीश्वर द्वीप की जयमाला पर प्रवचन किये गये।

3. मुम्बई : यहाँ महापर्व के प्रसंग पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यानों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत सीमंधर जिनालय में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, दादर में पण्डित सौरभजी शास्त्री, मलाड में ब्र. हेमचंदजी 'हेम', मलाड (एवरशाइन नगर) में पण्डित विपिनजी शास्त्री, बोरीवली में पण्डित अश्विनभाई शाह, दहीसर में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, भायंदर में पण्डित जयकुमारजी बारां एवं वसई में पण्डित रीतेशजी डडूका का स्थानीय समाज को लाभ मिला।

4. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक श्री सैंतालीस शक्ति विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी मंगलायतन द्वारा सैंतालीस शक्तियों एवं समयसार पर विशेष प्रवचन हुये। विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर ने संपन्न कराये।

5. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर चौबीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।इस अवसर पर पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा संपन्न कराये गये।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

सागर (म.प्र.) : यहाँ अंकुर कॉलोनी, मकरोनिया में मुमुक्षु मण्डल के विशेष निमंत्रण पर दिनांक 13 अप्रैल से 13 मई तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा गुणस्थान विषय पर कक्षाएँ ली गईं। इस अवसर पर पहले गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक का विषय एवं बन्ध सत्व आदि 10 करणों का विषय पढाया गया।

इसके अतिरिक्त कटरा बाजार स्थित महावीर चैत्यालय में एक प्रवचन, तारण-तरण चैत्यालय में एक प्रवचन एवं रामपुरा के स्वाध्याय मण्डल में दो प्रवचन हुए। इन सभी स्थानों पर गुणस्थान विषय को पढने हेतु विशेष जिज्ञासा व्यक्त की गई एवं उन्हें भविष्य में आने का निमंत्रण दिया गया।

देशभर में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों की धूम

1. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधना नगर एरोड्रम रोड़ स्थित पंचबालयति जिनालय पर श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति इस 11वें वर्ष भी ग्रीष्मकालीन आठ दिवसीय जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर दिनांक 6 से 13 मई 2012 तक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 800 बच्चों एवं साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

कार्यक्रम के प्रमुख संयोजक श्री विजयजी बड़जात्या एवं पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल थे।

2. औरंगाबाद (महा.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 26 मई से 2 जून तक द्वितीय आध्यात्मिक बाल संस्कार व प्रौढ शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन प्रात: 8 बजे भव्य जिनवाणी शोभायात्रा से हुआ।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद के महाराष्ट्र प्रान्त के डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित विवेकजी महाजन, पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर, पण्डित संजयजी राऊत आदि 29 विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस शिविर में वाशिम, चिखली, ढोरकीन, वडोद बाजार, सेलू, कलमनूरी आदि स्थानों से लगभग 750-800 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का आयोजन पण्डित संजयजी राऊत एवं श्री रत्नाकरजी गाडेकर के मार्गदर्शन में तथा श्री चैतन्यजी गाडेकर, पण्डित किशोरजी धोंगडे व पण्डित चिन्तामणजी भुज के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

3. सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 27 मई से 3 जून तक पंचम बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित स्वतन्त्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा, पण्डित रवीन्द्रजी बकस्वाहा, पण्डित अंकितजी शास्त्री खड़ैरी एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

शिविर में प्रौढ, बाल व शिशु वर्ग की पाँच कक्षाओं का आयोजन किया गया और अन्तिम दिन परीक्षाएँ भी हुई। इस शिविर के माध्यम से लगभग 200 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

संपूर्ण शिविर का संयोजन व संचालन पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी ने किया।

4. नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन नागपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में सौ. शान्तिदेवी कोमलचंदजी जैन (आमगांव) परिवार के सहयोग से इस वर्ष दिनांक 2 से 10 जून तक 15वाँ सामूहिक शिक्षण शिविर विदर्भ

एवं महाकौशल के विभिन्न 31 स्थानों पर सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर में नागपुर (नेहरु पुतला) में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा समयसार, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा निश्चय-व्यवहार एवं ब्र. आरती बेन छिन्दवाड़ा द्वारा 24 ठाणा विषय पर कक्षा ली गई। इसके अतिरिक्त पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत नागपुर, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित आदेशजी बोरालकर, पण्डित संकेतजी बोरालकर, पण्डित आभाषजी जैन, विदुषी स्वर्णलताजी जैन, विदुषी सुनीता जी, डॉ. शकुनजी सिंघई द्वारा विभिन्न कक्षाओं का लाभ मिला।

नागपुर (तारण-तरण) में पण्डित आशीषजी महाजन वसमतनगर, काटोल में विदुषी शुभांगी मांगुलकर, रामटेक में पण्डित सुरेशजी बेलोकर वीहीगांव, शेंदूर जनाघाट में पण्डित अभिनन्दनजी चौहान आलते, नेरटिंगलई में पण्डित अक्षयजी चौहान व पण्डित विशालजी उपाध्ये, यवतमाल में पण्डित कुलभूषणजी वाकले वाशिम व पण्डित भूषणजी विरालकर, आरवी में पण्डित पीयूषजी सिंगटकर चन्द्रपुर, चांदूर रेलवे में पण्डित करणजी दिगम्बरे, हिवरखेड में गोम्मटेशजी चौगुले, पाला में पण्डित रोहितजी सिदनाथे, बोरगांव मंजू में पण्डित संदेशजी बोरालकर व पण्डित अक्षयजी अन्नदाते, मुर्तिजापुर में पण्डित स्वप्निलजी जैन व पण्डित अमोलजी महाजन, विसलरोंघे में पण्डित विवेकजी गडेकर, बुतीबोरी में पण्डित प्रदीपजी धोत्रे व पण्डित जिनकुमारजी जैन, जरूड में पण्डित सुमतिनाथ अम्बेकर, गणेशपुर में पण्डित श्रीशांतजी उखलकर, करेली में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर व पण्डित पीयूषजी गौरझामर, सिवनी में पण्डित द्विविजजी सेठी व पण्डित चिन्मयजी कोटा, हौशंगाबाद में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर व पण्डित सूरजजी मगदुम, सिंगोडी में पण्डित अंकितजी खडैरी, उभेगांव में पण्डित अशोकजी जैन, नरसिंहपुर में पण्डित निशांतजी वारासिवनी, बाबई में पण्डित नेमीचंदजी बंडा, वनखेडी में पण्डित अविनाशजी जैन, चांदामेटा में पण्डित अर्पितजी जैन, बैतूल में पण्डित चैतन्यजी जैन, परासिया में रूपेन्द्रजी जैन, चांद में पण्डित अभिषेकजी जैन व पण्डित सचिनजी जैन द्वारा धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

सभी स्थानों पर प्रात: जिनेन्द्र-पूजन, बालकक्षा, प्रौढकक्षा, प्रवचन, सायंकाल में जिनेन्द्र-भक्ति, प्रवचन एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।इस शिविर में 2258 छात्रों सहित 5958 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। सभी स्थानों पर समयसार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, छहढाला, मोक्षमार्गप्रकाशक, भक्तामर स्तोत्र आदि पर प्रवचन व कक्षायें हुई।

शिविर की विशेष उपलब्धि यह रही कि जैन छात्रों के अतिरिक्त 84 मुस्लिम छात्रों एवं 60 अन्य जैनेतर छात्रों ने भी धर्मलाभ लिया।

संपूर्ण शिविर पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली, पण्डित जितेन्द्रजी राठी नागपुर के संयुक्त मार्गदर्शन में पण्डित पंकजजी दाहतोंडे, पण्डित सतीशजी बोरालकर एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

शिविर में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन नागपुर एवं अ.भा.जैन महिला फैडरेशन नागपुर के कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

ज्ञातव्य है कि आगामी 16वाँ सामूहिक शिक्षण शिविर दिनांक 1 से 9 जून 2013 तक श्री रोहितभाई शाह (अध्यक्ष-श्रीजैन सेवा मण्डल नागपुर) के परिवार द्वारा आयोजित किया जायेगा। **– अशोककुमार जैन, नागपुर**

5. ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ दि. जैन पार्श्वनाथ ट्रस्ट दानाओली में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर के तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 9 जून तक जैन नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पदमचंदजी द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री अलीगढ व स्थानीय विद्वान पण्डित पवनजी शास्त्री, पण्डित अभयजी शास्त्री, कु.रश्मि, कु.युक्ति जैन व रवि जैन ने कक्षायें ली।

शिविर में प्रतिदिन जिनेन्द्र-पूजन, कक्षा, भक्ति एवं ज्ञानवर्धक अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दोपहर में फोन इन प्रोग्राम संचालित किया गया। शिविर में लगभग 350 लोगों ने धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर नवगठित अ. भा. जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर का शपथ ग्रहण व समापन समारोह 09 जून को सम्पन्न हुआ। इसके 64 सदस्यों (सभी पदाधिकारियों सहित) को तिलक व अंग वस्त्र से सम्मानित कर जिनवाणी की प्रभावना की शपथ पण्डित महेशजी ने दिलायी। तत्पश्चात् सम्पूर्ण कार्यक्रम के निर्देशक, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन म.प्र. के प्रदेश संयोजक एवं ग्रेटर ग्वालियर शाखा के महामंत्री पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री (ओमकार शर्ट्स) ग्वालियर को शिक्षण शिविरों के आयोजन व समय-समय पर सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में विशेष योगदान हेतु सम्मानित किया गया। अन्त में फैडरेशन द्वारा रविवारीय पाठशाला व फोन इन प्रोग्राम संपूर्ण ग्वालियर में संचालित करने की घोषणा की गई।

6. जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर में दिनांक 5 से 17 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी द्वारा प्रतिदिन बारह भावना पर प्रवचन, पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा बालबोध की कक्षा, पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना व पण्डित चन्द्रप्रभातजी शास्त्री बड़ामलहरा द्वारा छहढाला की कक्षा एवं पण्डित संजीवजी गोधा द्वारा विशेष प्रवचन का लाभ मिला।

शिविर में श्री नथमलजी झांझरी परिवार का विशेष सहयोग रहा।

7. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में वैशाली नगर स्थित नवनिर्मित जिनमंदिर ऋषभायतन में युवा प्रकोष्ठ की ओर से 22वाँ ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल, युवा एवं प्रौढ चेतना शिविर का दिनांक 17 से 25 जून तक आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं.कमलचंदजी पिड़ावा, पं.अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पं.विवेकजी शास्त्री सागर एवं पं.अपूर्वजी शास्त्री इन्दौर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

इस अवसर पर मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढाला एवं बालबोध पाठमाला भाग-1, 2 के आधार पर प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

इस शिविर में लगभग 110 शिविरार्थियों ने आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ लिया।

8. बुलढाणा (महा.) : यहाँ गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारतीय जैन संघटना बुलढाणा द्वारा दिनांक 2 से 8 मई तक जैन ज्ञान संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ध्रुवधाम से पधारे पण्डित करणजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी शास्त्री, पण्डित बाहुबलीजी शास्त्री, पण्डित अक्षयजी शास्त्री, पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री एवं पण्डित रोहितजी जैन द्वारा जिनवाणी के प्रचार-प्रसार का कार्य बहुत उत्साहपूर्वक किया गया।

यह शिविर महाराष्ट्र के विदर्भ व मराठवाडा प्रांत के बुलढाणा, वरुड, विहीगांव, अंबड, जालना, देवलगांवराजा आदि 6 स्थानों पर लगाया गया, जिसमें लगभग 215 विद्यार्थियों सहित 340 साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

शिविर का सफल संयोजन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित सतीशजी शास्त्री ध्रुवधाम एवं पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री अंबड ने किया। **– सतीश शास्त्री ध्रुवधाम**

9. भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर, भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 11 जून तक आठवाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी अमायन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. कल्पना बेन सागर, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी भिण्ड के अतिरिक्त श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा, श्री धरसेन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन अलीगढ, श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिर, श्री आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन दिल्ली, ब्रह्मचारी विद्वानों, विदुषी बहनों, भूतपूर्व शास्त्री एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा ज्ञानगंगा को प्रवाहित किया गया।

इस शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया था जहाँ पर कोई विद्वान नहीं पहुँच पाते हैं। सभी वर्गों के अनुसार (शिशु, बाल, किशोर, प्रौढ) पाठ्यक्रम बनाकर उसकी कक्षायें लगायी गई।

इस अवसर पर 171 विद्वानों के माध्यम से 9109 बालक-बालिकाओं सहित 14491 साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

10. अलवर (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के द्वारा दिनांक 18 से 27 मई तक ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा के अतिरिक्त श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं श्री धरसेनाचार्य दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा के विद्यार्थियों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। यह शिविर लगभग 30 स्थानों पर लगाया गया, जिसमें सैंकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर के संयोजक श्री शशिभूषणजी जैन एवं निर्देशक पण्डित अजितजी शास्त्री थे।

11. बड़ौत (उ.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल दिल्ली एवं मुमुक्षु मण्डल बड़ौत के संयुक्त तत्त्वावधान में दि.11 से 19 जून तक 'द्वितीय जैन जागृति शिक्षण शिविर' का आयोजन हुआ।

उद्घाटन के दौरान भव्य जिनवाणी शोभायात्रा का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् पण्डित राकेशजी शास्त्री नांगलोई के मार्मिक प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

यह शिविर दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा एवं उत्तराखण्ड के विभिन्न छोटे-बड़े 41 स्थानों पर लगाया गया, जहाँ देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे 80 विद्वानों ने तत्त्वप्रचार किया। शिविर में 2650 बच्चों सहित लगभग 3600 साधर्मियों ने जैनदर्शन के सिद्धांतों को समझकर धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर डॉ. वीरसागरजी शास्त्री द्वारा मार्मिक प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

तत्पश्चात् विभिन्न नगरों से आये प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों, नगर के शिविर प्रभारियों एवं विद्वानों को सम्मानित किया गया।

शिविर का संयोजन पण्डित गौरवजी शास्त्री बावली, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली द्वारा किया गया। शिविर के निर्देशक पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर थे।

ज्ञातव्य है कि बुलढाणा (महा.), अलवर (राज.), भिण्ड (म.प्र.) बड़ौत (उ.प्र.) आदि स्थानों पर शिविर के आयोजन में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

लगभग सर्वत्र ही श्री टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा; उनके सक्रिय सहयोग के बिना इसप्रकार का तत्त्वप्रचार का कार्य संभव नहीं है।

मुमुक्ष भाईयों एवं धार्मिक अध्ययन कराने वाली सभी संस्थाओं से –

हार्दिक निवेदन

जी-जागरण पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक अनेक वर्षों से आ रहे हैं, इसके अन्तर्गत 1 जुलाई 2012 से समयसार ग्रन्थ की गाथा-1 से क्रमश: प्रवचन प्रारम्भ हुए हैं।

समयसार के रसिक सभी साधर्मीजन प्रतिदिन इन प्रवचनों को अवश्य देखें एवं अपने मित्रों, साधर्मीजनों, रिश्तेदारों को भी देखने के लिये प्रेरित करें।

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण -पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) अवश्य लिखें। संपर्क हेतु ई-मेल एड्रेस हो तो अवश्य भेज देवें। **ह्न मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

पत्राचार का पता – दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) फोन नं.-0141-2705581, 2707458,
फैक्स-0141 - 2704127 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

वीतराग-विज्ञान (अगस्त-मासिक) ● 26 जुलाई 2012 ● वर्ष 31 ● अंक 1